SOCIAL PSYCHOLOGY (1)

B.A. (Hons) Part-III
Paper-V
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

प्रश्न:- पूर्वधारणा के कारणों पर प्रकाश डालें। भारत के संदर्भ में उसकी समाप्ति के उपायों का वर्णन करें (Throw light on causes of (factors) of Prejudice. Describe the measures to reduce Prejudice, Specially in Context of India.

पूर्वाग्रह या पूर्वधारणा किसी व्यक्ति, वस्तु, जाति या समूह आदि के विषय में बगैर किसी जाँच परख के पहले से लिया गया निर्णय अथवा विश्वास होता है। उसकी उत्पत्ति में विवेकपूर्ण तर्क या वैज्ञानिक तथ्यों की अनदेखी की जाती है। यह व्यक्ति को दूसरे के प्रति विशेष ढंग से सोचने, प्रत्यक्षीकरण करने एवं व्यवहार करने के लिये तत्पर बना देता है। इसकी उत्पत्ति, विकास एवं सम्पोषण के लिये कई कारक (कारण) उत्तरदायी होते हैं। उन तमाम कारकों को मनोवैज्ञानिकों ने तीन श्रेणियों में विभक्त किया है।

पूर्वधारणा की उत्पत्ति के कारण

(क) नापसंदगी के सिद्धान्त Dislike theory
(ख) सामाजिक कारक Social factors
(ग) मनोवैज्ञानिक कारक Psychological factors

(क) नापसंदगी सिद्धान्त:- पूर्वधारणा के संदर्भ में विकसित यह प्राचीनतम सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य स्वभाव से अपने से भिन्न लोगों या प्रजाति अथवा समूह को नापसंद करता है। उनके प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति रखता है और वैर भाव पाल लेता है, जो Prejudice की उत्पत्ति का कारण बन जाता है। आजकल आधुनिक मनोवैज्ञानिक इस सिद्धान्त को अमान्य घोषित कर दिये हैं। आलोचना करते हुए कहना है कि पूर्वधारणा एक अर्जित गुण है, न कि स्वाभाविक। अतः Prejudice की उत्पत्ति स्वाभाविक कैसे हो सकती है। Klinberg के अनुसार:- "Prejudice is aquired not natural."

(B) सामाजिक कारक :- सामाजिक कारक पूर्वाग्रह को अर्जित करने में सहायक होते हैं। आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिकों का कहना है, कि Prejudice के विकास पर सामाजिक कारकों का गहरा प्रभाव पड़ता है। सामाजीकरण के द्वारा पूर्वधारणाएँ समूह के सदस्यगण अर्जित कर लेते हैं। इसके विकास एवं सम्पोषण के पीछे कई तरह के Social factors प्रमुख भूमिका निभाते हैं जिनका संक्षिप्त वर्णन नीचे किया जा रहा है:-

(1.) अनौपचारिक शिक्षा :- अनौपचारिक शिक्षा से तात्पर्य वैसी शिक्षा से है जिसे हम अपने परिवार तथा पड़ोस एवं परिवेश से Socialization के द्वारा सीख लेते हैं। Prejudice हम अपने आस पड़ोस से ग्रहण करते हैं। बच्चे अपने परिवार के विश्वास, मूल्यों एवं मानदंडों को ग्रहण करते हैं और दूसरे समुदाय के प्रति के खिलाफ Negative धारणाएँ विकसित कर लेते हैं। हार्टलेय ने अपना अध्ययन विभिन्न कॉलेजों के 35 मानव जातीय समूह के प्रति स्वीकृति एवं अस्वीकृति देने के लिये कहा। इसमे तीन मानवजातियाँ काल्पनिक थी। यह देखा गया कि अधिकांश बच्चे काल्पनिक मानवजातियों के प्रति नकारात्मक प्रवृति दिखलाये थे।

(2) औपचारिक शिक्षा :- ऐसी शिक्षाएँ संस्थाओं, स्कूल, कालेजों एवं पाठशालाओं एवं मकतब, मदरसाओं द्वारा दी जाती है। इसमें स्कूल के शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यदि शिक्षक एवं संस्था के विचार तथा व्यवहार पूर्वाग्रहयुक्त होते हैं तो वहाँ के छात्रों में Prejudice विकसित होने की अवसर बढ़ जाते हैं।

(3) धार्मिक कारण :- धर्म एवं पूर्वाग्रह में धनात्मक सम्बन्ध है। अपने देश भारत में अनेक धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं जिनकी अलग-अलग मान्यताएँ एवं विश्वास है। अपने अपने धर्मों की मान्यताओं अंधविश्वासों को लोग सहर्ष स्वीकार कर लेते है तथा वहन करते हैं। ऐसे लोग अपने धर्म को श्रेष्ठ और अन्य को तुच्छ मानते हैं। अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति कई तरह की गलत धारणाएँ एवं विश्वास पाले रहते हैं जो Prejudice का कारण बनता है। कई अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि हिन्दुओं की तुलना में मुसलमान अधिक Prejudiced होते हैं।

(4.) समाजार्थिक कारक :- पूर्वधारणा की यह एक गौण कारण है। क्योंकि निश्चित तौर पर कहना मुश्किल है कि इसका कितना प्रभाव पड़ता है। भारतीय समाज में अगर देखा जाए तो Advantage group की तुलना में Disadvantaged group में मानवजातीय पूर्वधारणा अधिक पाई जाती है। इसी तरह whites में Negroes के प्रति अधिक Negative attitude पाई जाती है।

(5.) नगरीकरण :- आधुनिक समाजशास्त्रियों का कहना है कि शहरीकरण का पूर्वधारणा निर्माण में योगदान होता है। शहरों की भागदौड़, भीड़-भाड़, शोरगुल, असुरक्षा की भावना बिखरा समाज पूर्वाग्रह के लिए भूमि तैयार कर देता है। लोग एक दूसरे से दूरी बनाकर रहते हैं जिससे अविश्वास पनपता है जो दूसरे के प्रति Prejudice का कारण बन जाता है।

(6) यौन भिन्नता :- यौन भिन्नता का सम्बन्ध Prejudice निर्माण से है। लड़के-लड़कियों में शिक्षण-प्रशिक्षण अलग-अलग ढंग से की जाती है जो विशेष तरह का Traits develop करता है। इसी का नतीजा है कि पुरुषों की तुलना में स्त्रियों में पूर्वधारणा अधिक विकसित होती है। दत्ता (1965) का अध्ययन विश्वविद्यालय के छात्र छात्राओं पर किया गया जो यह दर्शाता है कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में धार्मिक पूर्वधारणा अधिक पाई जाती है।

(7) जाति :- जाति भी पूर्वधारणा निर्माण में सहायक होता है। भारत में कई जातियाँ, उपजातियाँ रहती हैं। कुछ जाति के लोग अपने को श्रेष्ठ मानते हैं और दूसरी जाति को नीच मानती है। अनेक समाज मनोवैज्ञानिकों ने इस संदर्भ में अध्ययन किया और पाया कि उच्च जाति के

निम्न जाति के लोगों के प्रति पूर्वधारणा पाले रखते हैं।

(8) शहरी एवं देहाती क्षेत्र :- आधुनिक अध्ययन यह बताते हैं कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के लोगों में पूर्वधारणा का स्तर अलग-अलग होता है। ग्रामीण क्षेत्र के लोग अधिक रूढ़िवादी होते हैं। अतः उनमें पूर्वधारणा अधिक विकसित होती है। कुछ अध्ययन बताते हैं कि जातीय पूर्वाग्रह देहाती क्षेत्रों में अधिक होती है जबकि धार्मिक पूर्वाग्रह शहरी क्षेत्र में अधिक पाई जाती है।

(9) मास मिडिया (Mass Media) पूर्वाग्रह के निर्माण, सम्पोषण एवं स्थानान्तरण में मिडिया की अहम भूमिका होती है। पुस्तकों, नाटकों, कहानियों, पत्रिकाओं आदि द्वारा पूर्वधारणाओं को सम्पोषण प्राप्त होता है। प्राचीन घटनाओं विचारों एक समूह का दूसरे के प्रति नजरिया आदि इनके माध्यम से लोग जानकारी प्राप्त करते हैं। इसके अलावे रेडियो, टी० वी०, इन्टरनेट, फेसबुक, मोबाईल, व्हाट्स एप्प, इन्स्टाग्राम आदि भी इसको हवा देते हैं और सम्पोषण में मदद करते हैं। इस संदर्भ बेरेल्सन एवं सालटर ने एक अध्ययन किया। अमेरिकी कहानियों का प्रसारण एवं Content analysis कराया गया। यह देखा गया कि उससे पाठकों में विजातीय अल्पसंख्यक समूहों के प्रति पूर्वाग्रह में वृद्धि हो गई थी।

(ग) मनोवैज्ञानिक कारक

मानवजातीय पूर्वधारणाओं के विकास एवं सम्पोषण में व्यक्तित्व के शीलगुणों तथा मनोवैज्ञानिक कारकों की बड़ा ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिक कारकों का वर्णन नीचे किया जा रहा है जो Prejudice की उत्पत्ति एवं सम्पोषण का कारण बनते हैं। मनोवैज्ञानिक कारकों का आधार व्यक्तिगत होता है।

(i) कुण्ठा तथा आक्रमण :- वस्तुतः यह सिद्धान्त फ्रायड की मूल प्रवृत्यात्मक सिद्धान्त पर आधारित है। फ्रायड का कहना

है कि जब व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरा नहीं हो पाती या इसकी पूर्ति में कोई बाधा उत्पन्न करता है तो व्यक्ति कुण्ठा का शिकार हो जाता है और आक्रमक व्यवहार उस व्यक्ति के समूह के प्रति दिखलाता है। इसी तरह यदि दूसरा समूह सबल होता है तो किसी दूसरे व्यक्ति या समाज पर यह गुस्सा विस्थापित हो जाता है। Simpson (1972) के अनुसार अक्सर अल्पसंख्यक समूह के सदस्यों के प्रति Negative attitude एवं आक्रमक व्यवहार का निशाना बनते हैं। यह एक प्रकार का Displaced hostility (वैरभाव) है। इसीलिए इसे Special goat theory भी कहा जाता है।

(ii) चिन्ता:- पूर्वधारणा के विकास में एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक चिंता भी है। अध्ययनों में यह पाया गया कि असुरक्षा की भावना पूर्वाग्रह को जन्म देती है। ऐसे लोग या वर्ग के लोग दूसरे वर्ग के लोगों से अकारण दूरियाँ बनाकर रहते हैं क्योंकि दूसरे लोगों को अपने लिए घातक समझ बैठते हैं। इन हालातों में Prejudice का विकास एवं सम्पोषण होते रहता है।

(iii) व्यक्तित्व: व्यक्तित्व का पूर्वधारणा से धनात्मक सम्बन्ध है। सत्तावादी व्यक्तित्व वाले लोगों में अधिक Prejudice पाया जाता है। इसी तरह रूढ़िवादी व्यक्तित्व वाले लोग पूर्वधारणा के सम्पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस संदर्भ में किये गए कई अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं। भारतीय संस्कृति पर इस संदर्भ में कई अध्ययन हुए हैं जो यह बताते हैं कि व्यक्तित्व के शीलगुणों एवं पूर्वाग्रह में Positive Correlation है। इसी तरह संवेगात्मक रूप से अस्थिर लोग ज्यादा Prejudice निर्माण में सहायक होते हैं। सिन्हा (1974) ने अपने अध्ययन में पाया कि Introverted Personality वाले Extroverted की तुलना में अधिक Prejudiced होते हैं।

प्रेरणा :- यह भी पूर्वाग्रह की उत्पत्ति विकास एवं सम्पोषण में एक भूमिका निर्वाह करता है। रेकर्ड एवं बैकमैन का इस संदर्भ में कहना है कि जिस व्यवहार को प्रेरित किया जाता है, अर्थात जिस व्यवहार को करने पर पुरस्कार मिलता है उसे लोग कायम रखते हैं। इसके अलावे जिन व्यवहारों को छोड़ने पर दण्ड मिलता है, उसे भी व्यक्ति कायम रखते हैं। अगर एक हिन्दू या मुसलमान एक दूसरे के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति रखते हैं तो उन्हें वह समाज हीरो बना देता है, शाबासी देता है, पुरस्कृत करता है तो यह सम्पोषित हो जाता है। उसी तरह आज भी एक ब्राह्मण हरिजन के घर खाना खाता है तो दण्ड का भागी बनता है। इसीलिए Reward Cost outcomes का प्रभाव भी Positive, Negative Prejudice के निर्माण में सहायक होते हैं।

प्रतिस्पर्द्धा एवं ईर्ष्या :- एक समूह या व्यक्ति जब दूसरे व्यक्ति या समूह के प्रति ईर्ष्याभाव रखता है। आगे बढ़ते देखकर जलता है तो Negative Prejudice का कारण बनता है। यदि निम्नवर्ग के लोग आरक्षण एवं अन्य आर्थिक मदद से आगे बढ़ते हैं तो उच्च वर्ग के लोग अपनी सामाजिक आर्थिक हैसियत के लिए खतरा महसूस करने लगते हैं और कई तरह के Negative Prejudice विकसित कर लेता है।

व्यवहारिक लाभ :- पूर्वधारणा की उत्पत्ति, विकास एवं पोषण के पीछे कुछ लोगों को व्यवहारिक लाभ मिलता है। इसीलिए उसे बनाये रखते हैं। ब्राह्मण लोगों को समाज में सभी लोग अच्छे निगाह से देखते हैं, पवित्र मानते हैं। इसलिए वे निम्नजाति के लोगों से दूरी बनाकर रहते हैं। विभिन्न तरह की Negative Prejudice को विकसित करने में उन्हें व्यवहारिक लाभ मिलता है।

इस प्रकार देखते हैं कि Prejudice की उत्पत्ति, विकास एवं सम्पोषण के पीछे कई कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिनमें Social एवं Psychological factors का महत्वपूर्ण हाथ होता है जिनका वर्णन ऊपर किया गया है।

[signature] 28.8.2020